Postal Regn. - RTK/010/2020-22
RNI - HRHIN/2003/10425

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र

मई 2023 (द्वितीय)

नई दिल्ली में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक में आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री राधाकृष्ण आर्य, महामंत्री श्री उमेद आर्य, अंतरंग सदस्य श्री राममेहर आर्य, उपस्थित रहे एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा प्रदेश भर में चलाई जा रही गतिविधियों की जानकारी साझा की।

Email : aryapsharyana@yahoo.in कृण्वन्तो विश्वमार्यम् Visit us : www.apsharyana.org

Created by Universal Document Converter

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वेदप्रचाराधिष्ठाता श्री रमेश आर्य, गांव-सांदल खुर्द, जिला सोनीपत में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा चलाए जा रहे वेदप्रचार कार्यक्रम के माध्यम से स्कूल के बच्चों को आध्यात्मिक, सामाजिक, नैतिक एवं बौद्धिक शिक्षा प्रदान करते हुए।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य ने बताया कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा द्वारा संचालित वेदप्रचार रथ प्रदेश भर में अलख जगा रही है। हरियाणा प्रदेश में 12 वेदप्रचार रथों के द्वारा वेदप्रचार किया जा रहा है। तथा साथ में प्राकृतिक कृषि और नशामुक्ति अभियान ही आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य। इसी कड़ी में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनोपदेशक श्री जसविन्दर आर्य व मनीराम आर्य स्वामी दयानन्द स्कूल, गाँव मानस में वेदप्रचार करते हुए।

Created by Universal Document Converter

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,124
विक्रम संवत् 2080
दयानन्दाब्द 200

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 19 अंक 8

सम्पादक :
उमेद सिंह शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सह-सम्पादक
आचार्य सोमदेव

सम्पादकीय विभाग
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993

॥ ओ३म्॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

मई, 2023 (द्वितीय)
16 से 30 मई, 2023 तक

इस अंक में....

1. सम्पादकीय—वेद-प्रवचन 2
2. विदुर-नीति प्रश्नोत्तरी 3
3. चक्रव्यूह में आज का अभिमन्यु (युवक) 4
4. नास्तिकता भी एक अन्धविश्वास है 6
5. प्रकृति को आंख दिखाने का नतीजा 8
6. क्या महाभारत में मन्त्र हैं ? 9
7. रात के उत्सवों और रात की शादियों में हो रही जीवन की बर्बादी 11
8. समाचार-प्रभाग व शेषभाग 13

आर्य प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका के प्रसार में सहयोग दें

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने योग्य पत्रिका है। यदि आप इसके पाठक बनेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे अन्य लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करके ऋषि ऋण से अनृण होवें।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक का वार्षिक शुल्क 200/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2000/- रुपये है।

आप उपरोक्त राशि 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' दयानन्दमठ रोहतक के नाम से बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा भिजवाकर सदस्य बन सकते हैं।

—सम्पादक

Created by Universal Document Converter

सम्पादकीय...

वेद-प्रवचन

❑ संकलन—उमेद शर्मा, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

गतांक से आगे....

''**कुतस्तु खलु सौम्येव स्यादिति होवाच। कथमसतः सज्जायेतेति। सत्त्वेव सौम्येदमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयम्।**'' —छान्दोग्य प्रपाठक 6, खण्ड 2, मन्त्र 1-2

हे सौम्य! ऐसा हो ही कैसे सकता है? कहीं असत् से भी सत् सम्भव है? इसलिए ऐसा ही मानना चाहिए कि सृष्टि के पूर्व सत् था।

भगवद्गीता 2.16 भी तो यही कहती है—'**नासतो विद्यते भावः**' 'असत्' से सत् नहीं हो सकता। उपनिषद् आदि के इन वाक्यों से दो बातें सिद्ध होती हैं—पहली यह कि सृष्टि के पूर्व 'असत्' अर्थात् शून्य था। परन्तु साथ ही दूसरी यह बात भी सिद्ध है कि सृष्टि 'असत्' अर्थात् मिथ्या नहीं है। '**कथमसतः सज्जायेत**'? 'असत्' से सत् कैसे उत्पन्न होगा? इस प्रश्न से ही विदित होता है कि जगत् असत् नहीं है। जगत् का असत् न होना यह हेतु है इस बात का कि जगत् से पहले कुछ रहा होगा। यदि जगत् मिथ्या होता अर्थात् जगत् की कोई सत्ता होती ही नहीं तो कौन उसके कारण की खोज करता? कारण के जानने की इच्छा तो तभी हुई जब जगत् को सत्य समझा। जो जगत् को मिथ्या मानते हैं उनके मत का इस वाक्यों से खण्डन होता है। मुसलमान, ईसाई लोगों का मत है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान् है, वह असत् (अदम) से भी सत् (वजूद) को उत्पन्न कर देता है। ये लोग नवीन वेदान्तियों के समान जगत् को मिथ्या तो नहीं मानते, परन्तु जगत् के उपादान कारण (इल्लतमाद्दी) से इनकार करते हैं। वे इतना तो स्वीकार करते हैं कि '**कथमसतः सज्जायेत**' बिना सत् के सत् उत्पन्न कैसे होगा? परन्तु बिना उपादान के कार्य होना उसके मत में असम्भव है अर्थात् बिना कुम्हार के तो घड़ा नहीं बन सकता परन्तु बिना मिट्टी के बन सकता है। इस अधूरे अनुमान के लिए कोई आधार नहीं है। जगत् में कोई ऐसा दृष्टान्त नहीं मिलता कि बिना उपादान के कोई चीज बन सके। कुछ ऐसे कार्य तो देखे जाते हैं जिनका उपादान प्रत्यक्ष है परन्तु कर्त्ता दिखाई नहीं पड़ता, परन्तु ऐसा तो एक कार्य भी नहीं जिसका उपादान (इल्लतमाद्दी) दृष्टिगोचर नहीं होता हो। कंगन का कर्त्ता सुनार दिखाई न पड़े परन्तु कंगन का सोना तो दिखाई पड़ता है। अत एव जो नास्तिक कार्य और उसके उपादान (मैटर) को मानते हैं और कर्त्ता को न देखकर उसके अस्तित्व से इंकार करते हैं उनके इस अधूरे अनुमान के लिए कुछ तो आधार हैं, परन्तु जो कर्त्ता को मानकर उपादान को अस्वीकार करते हैं वे तो निराधार भूल करते हैं। 'असत्' से सत् उत्पन्न नहीं हो सकता। इसका सीधा अर्थ यह है कि यह जो दिखाई देता है और जिसके अस्तित्व को सभी प्रत्यक्षादि प्रमाण सिद्ध करते हैं वह असत् से उत्पन्न नहीं हो सकता। इस प्रमाण से तो जगत् का मिथ्यात्व सिद्ध करते हैं वे तो देखते हुए भी नहीं देखते।

अब मन्त्र के दूसरे वाक्य को लीजिए ''**न 'सत्' आसीत्**''। सत भी नहीं था। यह कैसे हो सकता है कि सत् भी ना हो और असत् भी ना हो? यह एक पहेली-सी है। इसी को समझना है। दो परस्पर विरोधी वस्तुओं में से एक होनी चाहिए और दूसरी नहीं। न दोनों का एक साथ 'होना' सम्भव है, न 'न होना' सम्भव। एक ही स्थान पर और एक ही समय दोनों हों या दोनों न हों यह सम्भव नहीं। यदि ऐसे वाक्य आ जाएँ जो दो परस्पर विरोधी बातों का एक स्थान वा एक समय न होना बताते हैं तो समझना चाहिए कि वे परस्पर विरोधी नहीं अपितु भिन्न हैं। भिन्नता और विरोध में भेद है। भिन्न वस्तुएँ कभी-कभी एक-दूसरे की पूरक होती हैं। जैसे सिर और धड़। कभी-कभी दो परस्पर विरोधी वस्तुओं में कोई अन्य मध्यस्थ भी होता है जैसे शत्रु और अशत्रु के बीच उदासीन। ऊपर जो असत् और सत् दोनों का निषेध किया गया, यहाँ सत और असत् परस्पर विरोधी नहीं हैं। 'सत् भी नहीं था' यह इसलिए कहा गया कि कार्य रूप जगत् जिसको सभी कहते हैं कि 'है' वह नहीं था। यदि होता तो उसकी उत्पत्ति कैसे हो सकती? इसी को विस्तार से आगे कहा है कि लोक-लोकान्तर जो आकाश में दिखाई दे रहे हैं और जिनकी अपेक्षा से हम आकाश को आकाश कहते हैं नहीं था।

क्रमशः अगले अंक में....

Created by Universal Document Converter

विदुर-नीति प्रश्नोत्तरी

❑ संकलन—कन्हैयालाल आर्य, संरक्षक—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गतांक से आगे....

(2) यदि किसी वचन, प्रवचन को सावधानी से न सुना जाये तो वह वचन, प्रवचन भी नष्ट हो जाता है। अर्थात् समझ में नहीं आता या यदि कोई व्यक्ति बहरा है तो उसे कुछ भी सुनाया जाये तो भी वह उसका ग्रहण नहीं कर सकेगा, वह वचन प्रवचन भी नष्ट हो जाएगा।

(3) बुद्धिरहित व्यक्ति का शास्त्र ज्ञान नष्ट हो जाता है। या बुद्धिरहित से तात्पर्य अभ्यास रहित से है। यदि किसी वस्तु का ज्ञान प्राप्त कर लिया जाये, उसका बार-बार अभ्यास न किया जाये तो शास्त्र ज्ञान नष्ट हो जाता है।

(4) राख में किया जाने वाला हवन नष्ट हो जाता है। राख में जो भी घी, सामग्री डाला जायेगा वह राख में मिल जायेगा, अग्नि प्रदीप्त नहीं हो पायेगी। यदि अग्नि प्रदीप्त नहीं हुई तो हवन कैसा? इसलिए कहा गया है कि राख में किया गया हवन नष्ट हो जाता है।

प्रश्न 23. बुद्धिमान् व्यक्ति कैसे साधनों को अपनाकर दूसरे बुद्धिमान् व्यक्ति से मित्रता करे?

उत्तर-(1) बुद्धिमान् पुरुष किसी बात की जानकारी करे या ज्ञान प्राप्त करे तो उसकी मनन पूर्वक परीक्षा करे।

(2) बुद्धि द्वारा बार-बार कार्य की योग्यता का निश्चय करे।

(3) अन्य मनुष्यों से कार्य के बारे में सुने।

(4) अन्य मनुष्यों द्वारा किये गए प्रत्येक कार्य की सफलता या असफलता को स्वयं देखे।

(5) उन कार्यों की विशेषरूप से जानकारी करे तभी बुद्धिमानों का इन उपर्युक्त जांचों के पश्चात् किसी व्यक्ति से मित्रता करे।

प्रश्न 24. नम्रता, पराक्रमशीलता, क्षमा, सदाचार किन-किन दुर्गुणों को नष्ट कर देता है?

उत्तर-(1) नम्रता अपयश को नष्ट कर देती है यदि किसी व्यक्ति का अपयश फैल गया है तो उस समय वह अपन नम्रता दिखाता है तो शीघ्र ही वह अपयश समाप्त हो जायेगा और वह नम्र व्यक्ति शीघ्र ही पुन: यशस्वी बन जायेगा।

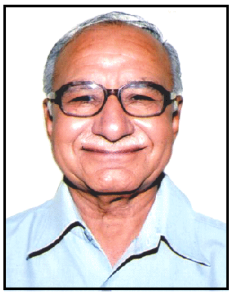

(2) पराक्रमशीलता (शूरता, वीरता) संकटों, अनर्थों को मार भगाती है चाहे कोई भी संकट आ जाये तो जो व्यक्ति वीर होते हैं वे इन संकटों पर शीघ्र ही विजय प्राप्त कर लेते हैं। तभी तो लोक में कहा गया है (वीरभोग्या वसुन्धरा) अर्थात् वीर ही इस पृथ्वी के सुखों को भोग सकता है।

(3) क्षमा क्रोध को नष्ट कर देती है। यदि कोई व्यक्ति आप पर क्रोध कर रहा है और आप उस क्रोध का उत्तर नहीं दे रहे हैं तो आप क्षमाशील माने जायेंगे। उत्तर न देने से दूसरे व्यक्ति का क्रोध भी शान्त हो जाता है।

(4) सदाचार दुर्व्यसनों को नष्ट कर देता है। यदि आपका आचार व्यवहार ठीक है तो पहले तो आपको कोई दुर्व्यसन लगेगा ही नहीं और कहीं भूल से व कुसंगति से दुर्व्यसन लग भी गया है तो आपका उत्तम व्यवहार उस दुर्व्यसन को नष्ट कर देगा।

यहाँ विदुर जी ने धृतराष्ट्र को यह समझाया है कि हे राजन्! यदि तुम्हारे पुत्र क्रोध एवं दुर्व्यसनों को त्याग दें तो उन्हें यश की प्राप्ति होगी और वे सदाचारी बन जायेंगे, उनमें क्षमा का गुण आ जायेगा।

प्रश्न 25. कुल की परीक्षा के साधन कौन-कौन-से हैं?

उत्तर-(1) कोई पुरुष किस प्रकार की भोजन सामग्री का उपयोग करता है, वह शाकाहारी है या मांसाहारी?

(2) उस पुरुष का जन्म-स्थान कैसा है?

(3) उसके रहने का स्थान कैसा है?

(4) वह सेवा आदि कार्यों में विश्वास रखता है या नहीं?

(5) वह किस प्रकार के वस्त्रों को धारण करता है?

क्रमशः अगले अंक में...

Created by Universal Document Converter

चक्रव्यूह में आज का अभिमन्यु (युवक)

❑ **भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य,** संपर्क-B-2, 92/7B, शालीमार नगर, जिला होशियारपुर (पंजाब) मो० 9464064398

(1) चक्रव्यूह

चक्रव्यूह युद्ध की एक प्रक्रिया है, जिसका ऐतिहासिक रूप से महाभारत के साथ सम्बन्ध है। महाभारत की कथा से परिचित पाठक जानते हैं कि धृतराष्ट्र के पुत्रमोह के कारण दुर्योधन ने हर तरह से मनमानी करनी शुरू कर दी। शकुनि के उकसाने पर अहंकारवश दुर्योधन ने पांचों पाण्डवों को बचपन से ही तंग करना शुरू कर दिया और उनके राज्य के अधिकार को सदा के लिए हड़पने का हर संभव प्रयास किया। जुए की शर्त के अनुसार बारह वर्ष के वनवास और एक साल के अज्ञातवास को जब पाण्डवों ने पूर्ण कर लिया, तब भी दुर्योधन ने पाण्डवों का राज्य न लौटाने की हठ न छोड़ी। श्रीकृष्ण जी ने दूत बनकर दुर्योधन को बहुत समझाया, पर उसका एक ही उत्तर था—'**सूच्यग्रं नैव दास्यामि विना युद्धेन केशव!**' अन्त में दुर्योधन के हठ और अभिमान ने महाभारत के युद्ध का रूप धारण कर लिया।

महाभारत का युद्ध प्रथम दस दिन कौरवों की ओर से भीष्म पितामह के सेनापतित्व में लड़ा गया। इसके पश्चात् कौरव सेना के सेनापति गुरु द्रोणाचार्य बने। उन्होंने वीर अर्जुन को युद्धभूमि से दूर ही उलझवा दिया और पीछे से दुर्योधन की चाल को पूरा करने के लिए युधिष्ठिर को पकड़ने का षड्यन्त्र चक्रव्यूह के रूप में रचा। चक्रव्यूह की कला में वीर अर्जुन के अतिरिक्त अन्य पाण्डवा निपुण न थे। अत: युवक अभिमन्यु ने अपने अधूरे ज्ञान के आधार पर ही चक्रव्यूह के भेदन का उत्तरदायित्व संभाला। वीर युवक के सामने जब कौरवों की कोई चाल सफल न हुई, तो अभिमन्यु को छ:-सात महारथियों ने घेर लिया। उन्होंने युद्ध के सारे नियमों को तोड़ा और निहत्थे अभिमन्यु को मारकर अपने दिल की भड़ास पूरी की।

यह तो प्रत्येक प्रकार से स्पष्ट है कि अभिमन्यु अपनी वंश परम्परा और इस उत्तरदायित्व को सम्भालने वाला एक युवक था। वह अपने कर्त्तव्य पालन में योग्य होने और जीवन को सफल बनाने के लिए योगेश्वर श्रीकृष्ण, वीर अर्जुन और गुरुजनों से शिक्षा प्राप्त करते हुए योग्य हो रहा था। ऐसे उभरते हुए युवक को उन महारथियों ने घेर लिया और हर नियम को तोड़कर सदा के लिए सुला दिया। ये महारथी अभिमन्यु के सम्बन्धी थे, अत: उसकी प्रगति में सहायक होने चाहियें थे, पर युद्ध में विपक्षी हो जाने के कारण ये अभिमन्यु को घेरकर उसको पीछे धकेलने वाले ही सिद्ध हुए।

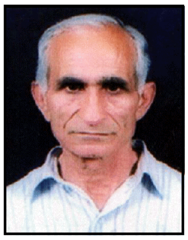

वस्तुत: आज के युवक की भी बहुत कुछ चक्रव्यूह में घिरे अभिमन्यु जैसी ही स्थिति है। ये आज के अभिमन्यु रूपी युवक पूर्ण योग्यता, क्षमता प्राप्त करने से पहले ही महारथियों द्वारा भटका दिये जाते हैं। तब निश्चित दिशा, स्पष्ट रास्ता, सुलझे विचार न होने के कारण सफल होना दूर की बात बनकर रह जाती है। जैसे कि हम देखते हैं कि राजनीतिक दलों ने कॉलेजों में भी अपने-अपने संगठन बना रखे हैं। ये राजनीतिक दल छात्रों को अपनी इच्छानुसार चलाते हैं। जबकि वहाँ छात्र पढ़ने के लिए आते हैं, पर अपने नेताओं के निर्देश पर वे पढ़ाई कम और उस-उस दल के सदस्य बनाने, नीतियों का प्रचार करने तथा दल की शक्ति बढ़ाने-दिखाने के अवसरों में अधिक लगे रहते हैं।

(2) युवा अवस्था

प्रत्येक बचपन से किशोर और किशोर से युवा अवस्था को प्राप्त होता है। बचपन एक असमर्थता, अशक्तता, बहुत कम समय की उम्र होती है। इन दिनों बच्चा निश्चिन्त, निर्दोष, सरल, विश्वासी होता है। इस स्थिति से विकास करते-करते कोई जब प्रगति करता है, तो उसके शरीर, मन, बुद्धि, पढ़ाई, सामर्थ्य में कुछ प्रौढ़ता आती है। तब वह हर तरह से सुदृढ़, सक्षम होने लगता है। इन दिनों उसके शरीर में, विचारों में, भावों में परिपक्वता, स्वावलम्बीपन आने लगता है।

युवा, युवक, युवती शब्द ✓यू (मिश्रणामिश्रणो) धातु से बनते हैं। अत: इन का भाव है कि जो जोड़ और तोड़

Created by Universal Document Converter

अर्थात् निर्माण तथा विनाश के कार्य में सक्षम हो, क्योंकि यह आयु तूफान, बाढ़, आग की तरह शक्ति का भण्डार होती है। इन दिनों कुछ बनने, प्राप्त करने, प्रगति करने की तीव्र इच्छा होती है और यह इस उम्र की स्वाभाविक बात होती है। इसके लिए वह सब कुछ करने के लिए सदा तैयार रहता है। ऐसे ही इन दिनों प्रत्येक अन्याय, अत्याचार न सहने और प्रतिरोध करने की स्वाभाविक भावना होती है। इसके लिए वह नेताजी, चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव आदि की तरह हर संघर्ष करने के लिए तैयार रहता है। तब वह स्पर्धा, संघर्ष, बलिदान से घबराता नहीं। अत: जोश और आत्मविश्वास के साथ वह सब कुछ प्राप्त करना चाहता है जिससे उसका जीवन विकसित हो।

हाँ, ये दिन चौराहे जैसे ही होते हैं। प्रगति, सफलता, सच्चाई, अच्छाई के नाम पर जो कोई जो बताता है। युवक उत्साह, उमंग, शक्ति का स्रोत होने से उधर चल पड़ता है। युवक के अधूरे ज्ञान, तीव्र चाहना का अनेक लाभ उठा लेते हैं और तब युवक की स्थिति चक्रव्यूह में घिरे अभिमन्यु जैसी हो जाती है।

युवा अवस्था में पग रखते हुए को व्यावहारिक रूप में जो चीजें आ घेरती हैं, वे ये हैं—

(1) **शौक**-जैसे-जैसे एक किशोर बड़ा होता है और अपने साथियों के सम्पर्क में आता है या अपने से बड़ों को ऐसा करते हुए देखकर तब देखा-देखी या किसी के कहने पर वह धूम्रपान करने लगता है। कुछ शौक-शौक में बीड़ी या सिगरेट के चस्के में आ घिरते हैं। यदि परिवार वालों की विशेष नजर, देखभाल नहीं होती, तो अन्दर ही अन्दर यह आदत पकने लगती है।

(2) **शान**-शान के नाम पर कुछ धूम्रपान की तरह मद्यमान की ओर झुकने लगते हैं। नशे के किसी न किसी साधन-शराब, गोली, कैप्सूल, इंजैक्शन, अफीम, चरस आदि के चक्र में पड़ जाते हैं। मस्ती, गम भुलाने के नाम पर कुछ इस आदत को पक्का कर लेते हैं। कभी-कभी यह विचार दिया जाता है कि शराब से शक्ति, स्फूर्ति आती है।

(3) **मांस**-ऐसे ही कुछ समझते हैं कि मांस खाने से शरीर मजबूत होता है।

(4) **जुए**-लाटरी और व्यभिचार का चस्का लगा लेते हैं। इस प्रकार अनेक उभरते युवक अपने अधूरेपन के कारण इन दुर्व्यसनों में उलझकर रह जाते हैं। कुछ बुरी संगति के कारण बुराइयों में धंसते चले जाते हैं। इन दुर्व्यसनों में आज युवक देखा-देखी कीचड़ में धंसे की तरह आगे से आगे धंसते जा रहे हैं। तभी तो कहा है—

'व्यसनी अधोऽधो व्रजति' मनुस्मृति 7,53

ऐसे ही वैचारिक दृष्टि से भी युवा के सामने उलझन आती है। निर्णय की कसौटी क्या है ?

(3) जीवन क्या है?

प्रत्येक जीना चाहता है और हर एक युवक सम्मान तथा प्रगति में ही अपने जीने को सार्थक समझता है। सफल जीवन वाले व्यक्तियों के जीवन को देखने पर पता लगता है कि धर्म, शास्त्र, भाषा, जात-बिरादरी, प्रदेश-ज्योतिष, वेश-भूषा (रीति-रिवाज) जीवन की सफलता के सूत्र हैं। हमारा जीवन इनसे जुड़कर चलता है। अत: जीवन में सम्मान, प्रगति प्राप्त करने की इच्छा रखने वाले युवक को इन के रहस्य को समझते हुए जीना चाहिए। अन्यथा व्यक्ति जड़ कटे की तरह बेकार, अधूरा होकर रह जाता है। आश्चर्य तो यह है कि इन सबकी उपयोगिता को देखते हुए भी अपनी विरासत की रक्षा के नाम पर इनको एक-दूसरे से अलग-अलग समझ लेते हैं। फिर इनको ऐसा रूप देते हैं कि किसी एक को ही सर्वस्व बना लेते हैं औरों को पूरी तरह से उपेक्षा कर देते हैं। कई बार सफलता चाहने वाली युवा पीढ़ी को या इन व्यर्थ का फैलाव कर लेते ही पूर्ण न बनाकर एकांगी अधूरा ही बनाकर रख देते हैं। तब ये किसी की प्रगति में सहायक न होकर पीछे धकेलने वाले बन जाते हैं।

जैसे कि कुछ माता-पिता अपने दस-बारह वर्ष के बच्चे को अपनी परम्परा की रक्षा के लिए एक विशेष दिशा में डाल देते हैं। वहाँ केवल एकांगी रूप में प्रयास चलता है। परम्परा विशेष की रक्षा ही एकमात्र लक्ष्य होता है। युवक की रुचि और उसके जीवन विकास को भुला दिया जाता है। परम्परा शब्द केवल एक बिन्दु तक में सीमित कर दिया जाता है। इस स्थिति में वह युवक एकांगी बनकर रह जाता है, फिर अवसर निकल जाने पर पुन: यत्न से भी

शेष पृष्ठ 16 पर....

Created by Universal Document Converter

नास्तिकता भी एक अन्धविश्वास है

❑ डॉ. विवेक आर्य

प्रश्न-नास्तिक बनने के मुख्य क्या-क्या कारण है?

उत्तर-नास्तिक बनने के प्रमुख कारण है—

1. ईश्वर के गुण, कर्म और स्वभाव से अनभिज्ञता।
2. धर्म के नाम पर अन्धविश्वास जिनका मूल मत-मतान्तर की संकीर्ण सोच है।
3. विज्ञान द्वारा करी गई कुछ भौतिक प्रगति को देखकर अभिमान होना।
4. धर्म के नाम पर दंगे, युद्ध, उपद्रव आदि।

ईश्वर के नाम पर अत्याचार, अज्ञानता को बढ़ावा देना, चमत्कार आदि में विश्वास दिलाना, ईश्वर को एकदेशीय अर्थात् एक स्थान जैसे मंदिर, मस्जिद आदि अथवा चौथे अथवा सातवें आसमान तक सीमित करना, ईश्वर द्वारा अवतार लेकर विभिन्न लीला करना, एक के स्थान पर अनेक ईश्वर होना, निराकार के स्थान पर साकार ईश्वर होना, ईश्वर द्वारा अज्ञानता का प्रदर्शन करना आदि कुछ कारण है। जो एक निष्पक्ष व्यक्ति को भी यह सोचने पर मजबूर कर देते हैं कि क्या ईश्वर का अस्तित्व है कि नहीं अथवा ईश्वर मनुष्य के मस्तिष्क की कल्पना मात्र है। उदाहरण के तौर पर हिन्दू-समाज में शूद्रों को मंदिरों में प्रवेश की मनाही है एवं अगर कोई शूद्र मंदिर में प्रवेश कर भी जाये तो उसे दंड दिया जाता है और मंदिर को पवित्र करने का ढोंग किया जाता है। यह सब पाखण्ड किया तो ईश्वर के नाम पर जाता है, मगर इसके पीछे मूल कारण मनुष्य का स्वार्थ है ना कि ईश्वर का अस्तित्व है।

ईश्वर गुण, कर्म और स्वाभाव से दयालु एवं न्यायकारी है, इसलिए वह किसी भी प्राणिमात्र में कोई भेदभाव नहीं करते। ईश्वर गुणों से सर्वव्यापक एवं निराकार है अर्थात् सभी स्थानों पर है और आकार रहित भी है। जब ईश्वर सभी स्थानों पर है तो फिर उन्हें केवल मंदिर में या क्षीरसागर पर या कैलाश पर या चौथे आसमान पर या सातवें आसमान पर ही क्यों माने। इससे यही सिद्ध होता हैं कि मनुष्य ने अपनी कल्पना से पहले ईश्वर को निराकार से साकार किया, उन्हें सर्वदेशीय अर्थात् सभी स्थानों पर निवास करने वाला से एकदेशीय अर्थात् एक स्थान पर सीमित कर दिया। फिर सीमित कर कुछ मनुष्यों ने अपने आपको ईश्वर का दूत, ईश्वर और आपके बीच मध्यस्थ, ईश्वर तक आपकी बात पहुँचने वाला बना डाला। यह जितना भी प्रपंच ईश्वर के नाम पर रचा गया यह इसीलिए हुआ, क्योंकि हम ईश्वर के निराकार गुण से परिचित नहीं है। अपनी अंतरात्मा के भीतर निराकार एवं सर्वव्यापक ईश्वर को मानने से न मंदिर की, न मूर्ति की, न मध्यस्थ की, न दूत की, न अवतार की, न पैगम्बर की और न ही किसी मसीहा की आवश्यकता है।

ईश्वर के नाम पर सबसे अधिक भ्रांतियां मध्यस्थ बनने वाले लोगों ने फैलाई है चाहे वह छुआछूत का समर्थन करने वाले एवं शूद्रों को मंदिरों में प्रवेश न देने वाले हिन्दू धर्म के पुजारी हो, चाहे इस्लाम से सम्बन्ध रखने वाले मौलवी-मौलाना हो, जिनके उकसाने के कारण इतिहास में मुस्लिम हमलावरों ने मानव जाति पर धर्म के नाम पर ऐसा कोई भी अत्याचार नहीं था जो उन्होंने नहीं किया था, चाहे ईसाई समाज से सम्बंधित पोप आदि हो जिन्होंने चर्च के नाम पर हजारों लोगों को जिन्दा जला दिया एवं निरीह जनता पर अनेक अत्याचार किये। न यह मध्यस्थ होते न ईश्वर के नाम पर इतने अत्याचार होते और न ही इस अत्याचार के फलस्वरूप प्रतिक्रिया रूप में विश्व के एक बड़े समूह को ईश्वर के अस्तित्व को अस्वीकार कर नास्तिकता का समर्थन करना पड़ता। सत्य यह है यह प्रतिक्रिया इस व्याधि का समाधान नहीं थी अपितु इसने रोग को और अधिक बढ़ा दिया। आस्तिक व्यक्ति यथार्थ में ईश्वर विश्वासी होने से पाप कर्म में लीन होने से बचता था। दोष मध्यस्थों का था जो आस्तिकों का गलत मार्गदर्शन करते थे। मगर ईश्वर को त्याग देने से पाप-पुण्य का भेद मिट गया और पाप कर्म अधिक बढ़ता गया, नैतिक मूल्यों को ताक पर रख दिया गया एवं इससे विश्व अशांति और अराजकता का घर बन गया।

ईश्वर में अविश्वास का एक बड़ा कारण अन्धविश्वास है। सामान्य जन विभिन्न प्रकार के अंधविश्वासों में लिप्त हैं और उन अंधविश्वासों का नास्तिक लोग कारण ईश्वर को

Created by Universal Document Converter

बताते हैं। सत्य यह है कि ईश्वर ज्ञान के प्रदाता हैं अज्ञान को बढ़ावा देने का मुख्य कारण मनुष्य का स्वार्थ है। अपनी आजीविका, अपनी पदवी, अपने नाम को सिद्ध करने के लिए अनेक धर्मगुरु अपने-अपने ढंग से अपनी-अपनी दुकान चलाते है। कोई झाड़-फूंक से, कोई गुरुमंत्र से, कोई गुरु के नाम स्मरण से, कोई गुरु की आरती से, कोई गुरु की समाधि आदि से जीवन के सभी दु:खों का दूर होना बताता है, कोई गंडा-ताबीज़ पहनने से आवश्यकताओं की पूर्ति बताता है, कुछ लोग और आगे बढ़कर अंधे हो जाते हैं और कोई-कोई निस्संतान संतान प्राप्ति के लिए पड़ोसी के बच्चे की नरबलि देने तक से नहीं चूकता है। विडंबना यह है कि इन मूर्खों के क्रिया-कलापों को दिखा-दिखाकर अपने आपको तर्कशील कहने वाले लोग नास्तिकता को बढ़ावा देते हैं। कोई भी अन्धविश्वास वैज्ञानिक प्रयोगों से सिद्ध नहीं हो सकता, इसलिए नास्तिकता को प्रोत्साहन वालों द्वारा विज्ञान का सहारा लेकर नास्तिकता का प्रचार करना भी एक प्रकार से अन्धविश्वास को मिटाने के स्थान पर एक और अन्धविश्वास को बढ़ावा देना ही है।

चमत्कार में विश्वास अन्धविश्वास की उत्पत्ति का मूल है। आस्तिक समाज में मुसलमान पैगम्बरों की चमत्कार की कहानियों में अधिक विश्वास रखते हैं, ईसाई समाज में ईसामसीह और संतों के नाम पर चमत्कार की दुकानें चलाई जाती हैं। हिन्दू समाज में चमत्कार पुराणों में लिखी देवी-देवताओं की कहानियों से लेकर गुरुडम की दुकानों तक फल-फूल रहा है। इन सभी का यह मानना है कि ईश्वर सब कुछ कर सकता है। स्वामी दयानन्द सत्यार्थप्रकाश में इस दावे की परीक्षा करते हुए लिखते है कि अगर ईश्वर सब कुछ कर सकता है तो क्या ईश्वर अपने आपको मार भी सकता है ? क्या ईश्वर अपने जैसा एक और ईश्वर बना सकता है जिसके गुण-कर्म और स्वभाव उसी के समान हों। इसका उत्तर स्पष्ट है नहीं। फिर ईश्वर सब कुछ कैसे कर सकता है ? इस शंका का समाधान यह है कि जो-जो कार्य ईश्वर के हैं जैसे सृष्टि की उत्पत्ति, पालन-पोषण, प्रलय, मनुष्य आदि का जन्म-मरण, पाप-पुण्य का फल देना आदि कार्य करने में ईश्वर स्वयं सक्षम है उन्हें किसी की आवश्यकता नहीं है। नास्तिक लोग आस्तिकों की चमत्कार के दावों की परीक्षा लेते हुए कहते हैं कि सृष्टि को नियमित मानते हो अथवा अनियमित। चमत्कार नियमों का उल्लंघन है। अगर ईश्वर की बनाई सृष्टि को अनियमित मानते हो तो उसे बनाने वाले ईश्वर को भी अनियमित मानना पड़ेगा जो कि असम्भव है। इसलिए चमत्कार को मनुष्य के मन की स्वार्थवश कल्पना मानना सत्य को मानने के समान है। न इससे ईश्वर का नियमित होने का खंडन होगा और न ही अन्धविश्वास को बढ़ावा मिलेगा।

नास्तिकता को बढ़ावा देने में एक बड़ा दोष अभिमान का भी है। भौतिक जगत् में मनुष्य ने जितनी भी वैज्ञानिक उन्नति की है, उस पर वह अभिमान करने लगता है और इस अभिमान के कारण अपने आपको जगत् के सबसे बड़ी सत्ता समझने लगता है। एक उदाहरण लीजिये सभी यह मानते हैं की न्यूटन ने Gravitation अर्थात् गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत की खोज की थी। क्या न्यूटन से पहले गुरुत्वाकर्षण की शक्ति नहीं थी ? थी मगर मनुष्य को उसका ज्ञान नहीं था अर्थात् न्यूटन ने केवल अपनी अल्पज्ञता को दूर किया था और इसी क्रिया को आविष्कार कहा जाता है। सत्य यह है कि जितनी भी भौतिक वैज्ञानिक उन्नति हैं वह अपनी अल्पज्ञता को दूर करना है। मनुष्य चाहे कितनी भी उन्नति क्यों न कर ले वह ज्ञान की सीमा को कभी प्राप्त नहीं कर सकता, क्योंकि एक तो मनुष्य की शक्तियां सीमित हैं, जबकि ज्ञान की असीमित है। दूसरी असीमित ज्ञान का ज्ञाता केवल एक ही है और वो है ईश्वर जिनमें न केवल वो ज्ञान भी पूर्ण है जो केवल मानव के लिए है अपितु वह ज्ञान भी है जो मानव से परत केवल ईश्वर के लिए है। स्वयं न्यूटन की इस सन्दर्भ में धारणा कितनी प्रासंगिक है—

"I do not know what I may appear to the world, but to myself I seem to have been only like a boy playing on the sea-shore, and diverting myself in now and then finding a smoother pebble or a prettier shell than ordinary, whilst the great ocean of truth lay all undiscovered before me." न्यूटन ने हमारी अवधारणा का समर्थन कर अपनी निष्पक्षता का परिचय दिया है।

क्रमशः अगले अंक में......

Created by Universal Document Converter

प्रकृति को आंख दिखाने का नतीजा

आओ फिर से लौटें प्राकृतिक कृषि की ओर

आज से 40-50 साल पहले सब कुछ प्राकृतिक ही था। हमारे पूर्वजों का प्रकृति में अटूट विश्वास था और उसी विश्वास के कारण पहले ना अस्पतालों में लंबी लाइनें थीं और ना ही खाने में जहर। उस समय हर किसान के पास गोबर की खा़द थी। यूरिया के लिये शहर जाकर लाइन में नहीं लगना पड़ता था। खुद के खेत का बीज था। अगली फसल के लिये अपने खेत का अच्छी क्वालिटी का बीज बचाकर रखता था। खेती बाड़ी पूरी तरह आत्मनिर्भर थी।

बाजार में बैठा विदेशी एजेंट बोला- आपके पास उन्नत किस्म के बीज नहीं हैं। यह बेकार है, आपको अच्छी पैदावार नही देते। ये बीज की थैली ले जाओ एक बार।

किसान बेचारा भोला था, महंगी बीज की थैली ले गया। खेत में बुवाई करदी। उन बीजों के साथ किसान के खेत में जहरीली विदेशी खतपतवार उग गयी।

खेत में अजनबी घास खेत में देखकर किसान फिर विदेशी एजेंट के पास गया। विदेशी एजेंट बोला—ये दवाई ले जाओ खेत में छिड़काव करो, मजबूरी में किसान को उस खतपतवार को खत्म करने की जहरीली दवाई चुपचाप खरीदनी पड़ी।

कमजोर बीज से कमजोर पौधे खड़े हुए तो कीट उनसे चिपक गये, तो एजेंट बोला, ये कीटनाशक छिड़को तथा रासायनिक खाद डालो, तभी अच्छी पैदावार मिलेगी।

मरता क्या न करता, किसान को रासायनिक खाद और कीटनाशक खरीदना पड़ा। अच्छी पैदावार के चक्कर में हर बार दोगुना रासायनिक खाद और कीटनाशक छिड़कने लगा, क्योंकि वह बीज ही इस तरह के थे, बिना रासायनिक खाद और कीटनाशक के पैदावार दे ही नहीं सकते थे। हर बार पहले से ज्यादा जहर चाहिये, ठीक उसी प्रकार जैसे नशेड़ी को हर आने वाले दिन हाई-डोज़ चाहिये।

अब किसान विदेशी एजेंट यानि कॉरपोरेट के चंगुल में पूरी तरह फँस चुका था। जीनोम सीड खरीद कर...। जैसा की सर्वविदित है, गुलामी हमेशा बीज से शुरू होती है। धीरे धीरे किसान की जमीन एक शराबी की तरह हो गयी, आदी बन गयी जहर की। किसान भी कर्ज के बोझ तले दबता चला गया। किसान को कुछ समझ नहीं आ रहा था। उसने भी दारू में अपना एस्केप रूट तलाशा। अब धरती को भी नशा चाहिये और किसान को भी, दोनों आदी हो चुके नशे के और एजेंट की पौ बारह पच्चीस। किसान के खुड बिकने लगे, तो किसान स्प्रे/पेस्टिसाइड खुद पीणे लगा।

अब धरती बंजर हो गयी। मिट्टी दूषित/जहरीली हो गयी। पेस्टीसाइड से हवा पानी सब कुछ जहरीला हो गया। पशुओं के भी टीके लगणे शुरू हो गये।

कॉरपोरेट ने बीज/खाद और कीटनाशक का बड़ा बाजार खड़ा कर लिया। कैंसर जैसी भयानक बीमारियों का जन्म हुआ। ड्रग इंडस्ट्री ने मानव औषधि का भी बड़ा बाजार खड़ा कर लिया, क्योंकि रासायनिक खाद से पैदा हुए अन्न ने मानव शरीर को बीमार बना दिया। रोग प्रतिरोधक क्षमता क्षीण हो गयी। आज हर मानव शरीर अन्न कम खाता है दवाई ज्यादा। सच कहें तो सिर्फ दवाइयों पर जिंदा है। यह आसानी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि उस समय अस्पतालों की संख्या क्या थी और आज के समय में अस्पतालों की संख्या कितनी तेजी से बढ़ी है और आज हर गली मोहल्ले में अस्पतालों की लाइन लगी है और उससे अधिक लाइन लगी है उसमें मरीजों की जो की नई-नई बीमारियों से जूझ रहे हैं क्योंकि खानपान पूरी तरह जहरीला हो चुका है। आज किसान की खेती पूरी तरह से एजेंट के कब्जे में है। वह जब चाहे देश मे अन्न संकट पैदा कर सकता है। किसान पूरी तरह से कॉरपोरेट/कंपनियों का गुलाम है उसके पास न देसी खाद है न देसी बीज। अब विदेशी एजेंट कह रहा है। आपने अपनी जमीन को बंजर

शेष पृष्ठ 16 पर....

Created by Universal Document Converter

क्या महाभारत में मन्त्र हैं?

❑ राजेश आर्य, गांव आट्टा, जिला पानीपत मो० 9991291318

गतांक से आगे....

प्रिय पाठकवृन्द! संस्कृत के अक्षर-अक्षर को प्रमाण मानने वाले हिन्दू परम्परावादी लोग महारथी भीष्म का जन्म जल के रूप में बहने वाली गंगा नदी से मानते हैं और सत्यवती का जन्म मछली (मत्स्या) के पेट से। जबकि वास्तव में ये गंगा, मत्स्या आदि नाम वाली स्त्रियाँ (मनुष्य) ही थी, क्योंकि प्रकृति में मनुष्य आदि की उत्पत्ति का प्रकार पहले भी वही था, जो आज है। पहले का या आज का कोई ऋषि-महर्षि इसे नहीं बदल सकता। मनोरंजन के लिए चाहे कोई कैसी भी कल्पना कर ले, पर वह कल्पना ही रहेगी, इतिहास नहीं।

कर्ण के जन्म की तरह महर्षि वेदव्यास, कृपाचार्य व द्रोणाचार्य के जन्म की भी विचित्र कल्पनाएं की हैं, जो उस काल के ऋषि-महर्षियों को भी कामी व दुराचारी प्रचारित करती हैं। आप सोचिये, क्या यह संभव है कि सत्यवती ने नाव में गर्भवती होते ही पुत्र उत्पन्न कर दिया और उत्पन्न होते ही बड़ा होकर वह पुत्र (वेदव्यास) अपने पिता के साथ चला गया। अप्सरा जानपदी को देखकर ऋषि शरद्वान (गौतम) का वीर्य सरकंडों में गिर गया, जिससे कृप-कृपी पैदा हो गये। घृताची अप्सरा को देखकर ऋषि भरद्वाज का वीर्य द्रोण (यज्ञकलश) में गिर गया और पुत्र (द्रोण) पैदा हो गया। इन सबसे भी बढ़कर कल्पना द्रौपदी के जन्म के विषय में की गई है कि उसकी उत्पत्ति अग्नि (यज्ञकुण्ड) से हुई थी। उसमें तो माता या पिता का कोई योगदान ही नहीं रहा। फिर वह राजा द्रुपद की पुत्री द्रौपदी या याज्ञसेनी कैसे कहलाई? द्रौपदी के विषय में तो और भी बहुत-सी कल्पनाएँ महाभारत व समाज में प्रचलित हैं। यद्यपि ये सब कल्पनाएँ हैं, पर व्यक्ति काल्पनिक नहीं थे। अत: आज हम उन्हीं कल्पनाओं में से कुछ पर चिन्तन करते हैं—

वैदिक मान्यता तो यही है कि प्राणियों के जन्म पूर्वजन्म के कर्मफल अनुसार होते हैं, पर महाभारत में द्रौपदी के जन्म के (पौराणिक मान्यतानुसार) दो कारण बताए हैं— आदिपर्व, अध्याय 166, श्लोक 48-49 के अनुसार आकाशवाणी ने बताया कि यह कन्या (युवती) क्षत्रियों का संहार करने के लिए प्रकट हुई है। यह देवताओं का कार्य सिद्ध करेगी। इसके कारण कौरवों को बड़ा भय प्राप्त होगा।

जबकि आदिपर्व के अध्याय 168 के अनुसार द्रौपदी का जन्म पाँच पति पाने के लिए हुआ था। (जबकि वह पूर्व जन्म में ही एक ही पति चाहती थी, पर शिवजी की मूर्खता से अगले जन्म में पाँच लेने पड़े) अब किसे सत्य माना जाए? सर्वप्रथम विचारणीय है कि राजा द्रुपद तो द्रोणाचार्य को मारने वाला पुत्र पाने के लिए यज्ञ कर रहे थे, फिर साथ में यह पुत्री कहाँ से आ गई? और द्रोण को मारने में इसकी क्या भूमिका थी? क्षत्रियों ने देवताओं का क्या बिगाड़ा था, जो वे उनका संहार करना चाहते थे? द्रुपद का अपमान तो द्रोण ने किया था, क्योंकि द्रुपद ने भी द्रोण का अपमान किया था, फिर कौरवों को भयभीत करने के लिए द्रौपदी क्यों प्रकट हुई? और क्या कौरव द्रौपदी से भयभीत हुए? क्या अग्नि में से अस्त्र-शस्त्र व वस्त्राभूषण युक्त युवक-युवती पैदा हो सकते हैं?

यदि महर्षि वेदव्यास ने पांचाल देश में जाने से पूर्व ही पाण्डवों को द्रौपदी के पूर्वजन्म की कथा सुनाकर उसे उन पांचों की पत्नी निश्चित कर दिया था, तो इसमें अर्जुन का क्या पराक्रम रहा? और 'पांचों बांटकर खा लो' (**भुङ्क्तेति समेत्य सर्वे**-190/2) कहकर मां कुन्ती बाद में इसे अधर्म मानकर परेशान क्यों हो रही थी? और युधिष्ठिर भी इसे अधर्म क्यों मान रहे थे? क्या उन्हें व्यास जी का वचन याद नहीं था कि **निर्दिष्टा भवतां पत्नी कृष्णा पार्षत्यनिन्दिता।** (168/15)

जब वेदव्यास को पता था कि द्रौपदी का जन्म पांच पतियों (केवल पाण्डवों) को प्राप्त करने के लिए हुआ है, तो उन्होंने यह बात राजा द्रुपद को पहले ही क्यों नहीं बता दी? जिससे वे द्रौपदी को पांचों की पत्नी बनाने को अधर्म कहकर युधिष्ठिर को इससे मना न करते और वेदव्यास जी को भी राजा द्रुपद को समझाने के लिए युधिष्ठिर को ही द्रौपदी का पति सिद्ध करते हुए '**दयानन्द सन्देश**' जून 2014 में लिखा जा चुका है। यथा—

Created by Universal Document Converter

1. महाभारत आदिपर्व (197-11,12) में द्रौपदी का पाणिग्रहण युधिष्ठिर द्वारा किया जाना लिखा है।

2. आदिपर्व (220-24) में द्रौपदी ने अर्जुन की पत्नी सुभद्रा को आशीर्वाद देते हुए कहा—'**निःसपत्नोऽस्तु ते पतिः।**' (तुम्हारे पति...)।

3. सभापर्व (67-29) में द्रौपदी के लिए '**नरेन्द्र पत्नी**' (राजा युधिष्ठिर की पत्नी) लिखा है।

4. सभापर्व (69-11) में द्रौपदी ने स्वयं को '**धर्मराजस्य भार्या**' कहा है।

5. सभापर्व (70-3) में दुर्योधन ने पाण्डवों का अलग-अलग नाम लेकर पति (पत्यौ) एकवचन में (युधिष्ठिर के लिए) प्रयोग किया है।

6. वनपर्व (52-44) में युधिष्ठिर ने द्रौपदी के विषय में कहा—'भार्या च मे सभां नीता प्राणेभ्योऽपि गरीयसी। (प्राणों से भी अधिक गौरवशालिनी मेरी पत्नी सभा में लाई गई)।

7. विराटपर्व (18-01) द्रौपदी ने स्वयं के लिए कहा—'यस्या भर्ता युधिष्ठिरः'।

8. विराटपर्व (22-79) में भीम ने द्रौपदी को '**भातुर्भार्या**' (भाई की पत्नी) कहा है।

9. महाप्रस्थानिक पर्व (3-38) में युधिष्ठिर ने द्रौपदी को केवल अपनी पत्नी बताते हुए कहा—'**द्रौपदी योषितां श्रेष्ठा यत्र चैव गता मम।**' '**मम**' का अर्थ '**मेरी**' होता है, 'हमारी (पांचों की) नहीं', तथापि द्रौपदी को पांचों की पत्नी मानने से पूर्व इन बिन्दुओं पर भी विचार कर लेना चाहिए।

1. क्या स्वयंवर की शर्त पूरी होते ही विजेता का परिचय प्राप्त किये बिना ही उसके साथ अपनी बेटी द्रौपदी को राजा द्रुपद अज्ञात स्थान पर बिना किसी साजोसामान के किसी 'अनाथ लड़की' की तरह भेज सकते थे?

2. अपने दामाद व उनके सम्बन्धियों को साधारण-सा भोजन तो गरीब से गरीब आदमी देता है। क्या राजा द्रुपद ने इतना भी नहीं किया होगा, जो स्वयंवर जीतने के बाद भी पांडव भिक्षा मांगकर लाये और द्रौपदी ने भी उसी भिक्षा में गुजारा किया (आदिपर्व 191-7)?

3. क्या यह संभव है कि बिना विवाह संस्कार के ही द्रौपदी रात में पांडवों के डेरे (कुम्हार के घर) में उन (पांचों) के पैरों में भूमि पर सोयी (191-9)?

4. क्या जो बातें अगले दिन घटित हुईं (पाण्डवों को महल में बुलाना व भोजन करवाना), वे उसी दिन, उसी समय और उसी स्थान पर नहीं होनी चाहिए थी?

5. क्या राजा द्रुपद बिना परिचय प्राप्त किये किसी अज्ञात व्यक्ति के साथ अपनी बेटी को भेज सकते थे, जो बाद में गुप्तरूप में उनका करने व्यक्ति भेजे? यदि द्रौपदी भीम-अर्जुन के साथ भेजी गई होती, तो क्या उनसे पूर्व अपने डेरे पर पहुंचे युधिष्ठिर, नकुल और सहदेव ने माता कुन्ती को यह शुभ समाचार नहीं दिया होगा (आदिपर्व 187-26)?

6. सारी कहानी इसी झूठ पर टिकी है कि द्रौपदी को साथ लेकर आये अर्जुन ने कहा कि माँ हम भिक्षा लाये, बांटकर खा लो, पांच की पत्नी बन गई। जबकि होना तो यह चाहिए था कि स्वयंवर में आये अन्य राजाओं की भांति अर्जुन का भी परिचय (स्वयंवर जीतने के बाद तो अवश्य) लिया जाता और उनका वहीं मान-सम्मान किया जाता। इसके बाद अर्जुन व द्रौपदी के विवाह की बात चलती। तब बड़े भाई के अविवाहित होने की बात अड़ती और राजा द्रुपद युधिष्ठिर से कहते—'**भवान् वा विधिवत् पाणिं गृह्णातु दुहितुर्मम**' (आदि० 194-22) अर्थात् आप ही विधिपूर्वक मेरी पुत्री का पाणिग्रहण करें।

जबकि पांच की पत्नी बनाने वालों ने पत्नी के पास जाने के नियम बनवाने के लिए नारद जी को भी बुला लिया। तब पाण्डवों ने नियम बताया कि द्रौपदी के साथ एकान्त में बैठे हुए हम में से एक भाई को यदि दूसरा देख ले, तो वह बारह वर्षों तक ब्रह्मचर्यपूर्वक वन में निवास करे। (आदि० 211-19)।

और अगले ही अध्याय में कथाकारों ने अर्जुन से यह नियम भी तुड़वा दिया। कहानी गढ़ी कि ब्राह्मण की गाय की रक्षा के लिए अर्जुन उसी कक्ष में अस्त्र-शस्त्र लेने गये, जहाँ युधिष्ठिर बैठे थे। अर्जुन बारह वर्ष के ब्रह्मचर्यपूर्वक वनवास की दीक्षा लेकर चल पड़े। वनवास में नागकन्या उलोपी अर्जुन पर मोहित हो गई तो अर्जुन ने उसे इरावान नामक पुत्र प्रदान कर दिया। मणिपुर की राजकन्या चित्रांगदा

शेष पृष्ठ 12 पर....

Created by Universal Document Converter

रात के उत्सवों और रात की शादियों में हो रही जीवन की बर्बादी

❑ महावीर 'धीर' रोहतक-9466565162

(1) देश में सबसे अधिक विकास यदि किसी चीज का हुआ है तो वह है अपराध! रोजाना हत्या, अपहरण और फिरौती, लूट-मार, बैंक डकैती, बलात्कार, छीना-झपटी, रुपए के लिए धमकी, रुपए दो, नहीं तो मार देंगे। यही चारों और देखने सुनने को मिलता है। नशे के लिए पैसे नहीं दिए तो पत्नी, माता और पिता को मार दिया जाता है। पिछले वर्ष अत्यन्त घिनौनी घटना हुई। नशे के लिए मां ने पैसे नहीं दिए तो मां को मारकर नशे में बेटा मृत मां का मांस ही खाता हुआ पुलिस ने पकड़ा। वासना में बेहोश युवा लड़कियों से सामूहिक दुष्कर्म करते हैं और क्रूरता से मार रहे हैं। विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों में प्रतिभाशाली युवा नशे कर रहे हैं, आत्महत्याएं कर रहे हैं। जयपुर स्थित कोटा शिक्षा संस्थान में प्रतिवर्ष छात्रों द्वारा आत्महत्याएं की जा रही हैं। बड़े-बड़े अधिकारी और वैज्ञानिक तक आत्महत्या करते रहते हैं।

(2) दूसरी ओर महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के बहुत से छात्र कक्षाओं में न जाकर पार्कों और होटलों में जाकर अमर्यादित कृत्यों में संलग्न रहते हैं। एक दो सन्तान वाले माता-पिता बच्चों को लाड-प्यार से पालते हैं। आज नगर गांव में सभी जगह दुकानों पर अस्वास्थ्यप्रद लेकिन स्वादिष्ट वस्तुएं आसानी से उपलब्ध हैं। माता-पिता बच्चों को ऐसी चीजें उपलब्ध कराते रहते हैं। बच्चों को पैसे भी दे दिए जाते हैं, जिससे बच्चों को दुकानदार नई-नई चीजें देते रहते हैं, जिससे बच्चों में अनेक प्रकार के रोग धीरे-धीरे पनपने लगते हैं। शीतक (फ्रिज) की अतिशीतल वस्तुएं खाते-खाते बच्चों में गले, खांसी, जुकाम, बुखार जैसे रोग रह-रह कर आते रहते हैं। तली वस्तुएं और अनेक प्रकार के मीठे खट्टे पदार्थ खा-खाकर बच्चों में अन्य रोगों के साथ-साथ मोटापा नामक रोग भी बहुतायत में फैल चुका है।

(3) रात्रि विवाह और दुर्घटनाएं-हमारे पूर्वजों ने लम्बी समय सीमाओं में अपनी खोज और अनुभवों से जीवन को संस्कारित और सुखी रखने के लिए सर्वांगीण अनुशासित शिक्षा और मर्यादित जीवन के लिए सोलह संस्कार परिवारों में संचालित किए थे, जबकि आज अधूरी, अरुचिकर और तनावपूर्ण शिक्षा के साथ जीवन भी अमर्यादित हो चुका है। सोलह संस्कारों में से केवल दो तीन संस्कार शेष हैं जिनमें प्रमुख है-विवाह संस्कार।

यह कहने में ही संस्कार रह गया है वास्तव में यह संस्कार नहीं केवल नशा प्रशिक्षण, अत्यन्त घटिया अश्लील गीत-नृत्य, डीजे पर मनमर्जी के गानों और नाच के लिए झगड़े, नशे और अहंकार में गोली चलाना, पूरी रात यही घटनाक्रम चलते हैं। कोई भी संस्कार के समय दिलाई जाने वाली शपथों की ओर ध्यान नहीं देता! बार-बार यही कहा जाता है कि—पंडित जी! जल्दी करो। माता-पिता स्वयं इन बातों पर ध्यान नहीं देते। विदाई के समय नींद और नशे में चलते हैं, जिससे प्राय: दुर्घटनाएं और मौतें हो रही हैं।

(4) हमारे नगर जिसमें रहने वाले कभी सभ्य और शालीन 'नागरिक' कहे जाते थे, और गांव वाले 'गंवार' कहे जाते थे, आज जितनी बुराइयां हैं वे नगरों में ही फलती फूलती हैं। आज के बहुत से छात्र पढ़ाई के नाम पर माता-पिता से दूर रहकर,माता-पिता के पैसों से जीवन को बर्बाद कर रहे हैं। दूसरे दिन पचासों लड़के और लड़कियां रात के समय पबों में नशा, डीजे पर अभद्र नाच गाने और हो हल्ला करते पकड़े जा रहे हैं। आस-पड़ोस के लोगों की इस बारे में निरन्तर शिकायतें आती रहती हैं। ऐसे पबों और शराब को सरकारों ने अपनी आय का साधन मान लिया है, जबकि यह आय नहीं है, यह तो अपराध है जिसे करके सरकारें परिवार और समाज में अशान्ति और झगड़े फैला रही हैं। जब माली ही पामाली करे तो कौन रखवाली करे?

Created by Universal Document Converter

(5) जिस सांप्रदायिक समस्या के समाधान के लिए देश का विभाजन किया गया था आज वह पहले से भी भयंकर हो चुकी है। छोटे से देश म्यांमार से निकाला गया रोहिंग्या रूपी कूड़ा हमने और हमारी सरकार ने भारत में बसा लिया है। ये रोहिंग्ये और बांग्लादेशी पूरे देश में नगर गांव में बस गए हैं। ये नशा करते हैं और नशे का व्यापार करते हैं। चोरी, जेबकतरी यौन अपराध सब बुराइयां ये करते रहते हैं। इनकी तेजी से बढ़ती जनसंख्या ने देश की जनसंख्या का संतुलन भयंकर रूप में विकृत कर दिया है। साधारण जनों को इन समस्याओं के बारे में कुछ भी नहीं पता। बुद्धिजीवी जानते हुए भी कबूतर की तरह आंखें बंद किए हुए हैं, देश विनाश की और स्वत: ही तेजी से बढ़ चुका है। गांव-गांव और नगर-नगर में लोगों को ईसाई बनाया जा चुका है! कुछ महीने पहले गोहाना उपमंडल के गांव सिवानका में महाराजा नाहरसिंह स्मृति जुलूस पर गांव के ईसाई बने लोगों ने पथराव किया था। यह किस बात का संदेश है? इसका परिणाम बहुत भयंकर रूप में आने वाला है। दुनिया का सर्वश्रेष्ठ संगठन आर्यसमाज भी नकारा साबित हो रहा है। अब इस देश को बचाने वाला दूर-दूर तक कोई भी दिखाई नहीं देता है।

एक ही समाधान-सर्वांगीण, रुचि अनुसार, सबके लिए समान गुरुकुल शिक्षा प्रणाली—सारी समस्याओं का समाधान सबके लिए समान, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में निहित है। शर्त यही है कि-अध्यापक हर प्रकार से उत्तम और चरित्रनिष्ठ हों, बस! जाति और संप्रदायों के नाम पर चलने वाले सभी शिक्षा संस्थानों, सामाजिक संगठनों पर प्रतिबंध लगा दिया जाए। जाति संप्रदाय का कालम सब जगह से समाप्त कर दिया जाए। शिक्षा संस्थानों से ही योग्यता और रुचि अनुसार कार्य देकर, माता-पिता शिक्षकों और बुद्धिजीवियों के सहयोग से प्रतिवर्ष सामूहिक रूप से विवाह संस्कार करके ढोल नगाड़ों की मधुर ध्वनिपूर्वक युवा जोड़ों को घर पर छोड़ा जाए। यदि सरकार और समाज इस बारे में मिलकर प्रेम से जन जागृति कर हर वर्ग के बुद्धिजीवियों को सहमत करे तो यह कार्य हो सकता है।

क्या महाभारत में मन्त्र.... पृष्ठ 10 का शेष....

को देखा तो, तो अर्जुन ने स्वयं उसके पिता चित्रवाहन के पास जाकर उसका हाथ मांग लिया और तीन वर्ष उसके साथ महल में बिताकर उसे बभ्रुवाहन पुत्र प्रदान किया। कुछ समय बाद अर्जुन द्वारका गये, तो कामपीड़ित हो सुभद्रा का अपहरण किया। फिर एक वर्ष द्वारका नगरी में रहे। जरा सोचिये, क्या ये विवाह बिना ब्रह्मचर्यपूर्वक वनवास की दीक्षा के बिना नहीं हो सकते थे? इन कहानियों ने क्या अर्जुन को अमर्यादित व चरित्रहीन नहीं बनाया है? क्या महलों में भोगपूर्ण निवास वनवास (ब्रह्मचर्यपूर्वक वनवास) कहलाता है? क्या पाण्डवों के राजमहल में भवनों की कमी थी, जो अर्जुन के अस्त्र-शस्त्र भी द्रौपदी के कक्ष (कमरे) में रखे हुए थे? रोता-चिल्लाता ब्राह्मण खाण्डवप्रस्थ में आया, क्या उसे रास्ते में कोई भी वीर (क्षत्रिय) नहीं मिला, जो चोरों से उसकी गाय छुड़ा दे? क्या पाण्डवों के पास सैनिक नहीं थे, जो साधारण से कार्य के लिए भी अर्जुन को स्वयं जाना पड़ा? क्या पाण्डव इतने अयोग्य थे कि अपनी पत्नी के पास जाने का नियम भी स्वयं नहीं बना सके, जो नारद जी को आना पड़ा? **क्रमश: अगले अंक में....**

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन **'आर्य प्रतिनिधि'** के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है, उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। **'आर्य प्रतिनिधि'** का वार्षिक शुल्क मात्र 200/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 2000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्यसमाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक **'आर्य प्रतिनिधि'** के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आपका सहयोग हमें प्राप्त होगा।

व्यवस्थापक—'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक,
दयानन्दमठ, रोहतक
मो० 7206865945, 8901387993

Created by Universal Document Converter

स्टेट किकबॉक्सिंग चैम्पियनशिप में गुरुकुल के छात्रों ने जीते 5 गोल्ड मेडल

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान राधाकृष्ण आर्य ने दिया छात्रों को आशीर्वाद

कुरुक्षेत्र, 18 मई 2023। हरियाणा किक बॉक्सिंग एसोसिएशन के तत्त्वावधान में 22वीं ऑल हरियाणा स्टेट किक बॉक्सिंग चैम्पियनशिप 2023 का आयोजन फरीदाबाद डिस्ट्रीक किकबॉक्सिंग एसोसिएशन द्वारा 13 से 15 मई तक हरियाणा स्टेट स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स सेक्टर-12, फरीदाबाद में किया गया। इस चैम्पियनशिप में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के खिलाड़ियों ने अलग-अलग कैटेगिरी में 5 गोल्ड मेडल जीतकर गुरुकुल की ख्याति में वृद्धि की है। गोल्ड जीतने वाले खिलाड़ियों का गुरुकुल पहुंचने पर जोरदार स्वागत किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान राधाकृष्ण आर्य सहित गुरुकुल के प्रधान राजकुमार गर्ग, प्राचार्य सूबे प्रताप ने सभी खिलाडियों व कोच महावीर आर्य को बधाई व शुभकामनाएं दीं। निदेशक कर्नल अरुण दत्ता ने भी खिलाड़ियों की इस उपलब्धि पर बधाई दीं।

प्राचार्य सूबे प्रताप ने बताया कि फरीबादाबाद में सम्पन्न हुई इस चैम्पियनशिप में गुरुकुल के छात्र हर्ष ने अंडर-54 भारवर्ग की प्वाइंट किक और किक लाइट इवेंट में अलग-अलग दो गोल्ड मेडल जीतकर नया इतिहास रचा है। वहीं समीर नारा ने अंडर-63 भारवर्ग के प्वाइंट फाइट में, गोपालजी ने फुल कान्टेक्ट में तथा विनय देवल ने अंडर-79 भारवर्ग के किक लाइट इवेंट में गोल्ड मेडल हासिल किया। साथ ही इन खिलाडियों का चयन नेशनल के लिए हुआ है। अब ये खिलाड़ी रांची में होने वाली नेशनल चेम्पियनशिप में हरियाणा प्रदेश का प्रतिनिधित्व करेंगे।

सभाप्रधान राधाकृष्ण आर्य ने कहा कि महामहिम राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी के मार्गदर्शन में गुरुकुल कुरुक्षेत्र देश का अग्रणी शिक्षण संस्थान बना हुआ है, शिक्षा के साथ यहां के छात्र खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर गुरुकुल की ख्याति को देश-दुनिया में प्रसारित कर रहे हैं। उन्होंने सभी खिलाड़ियों व किकबॉक्सिंग कोच महावीर आर्य को पुनः बधाई और आगामी चैम्पियनशिप में उम्दा प्रदर्शन के लिए शुभकामनाएं दीं।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक समाचार-पत्र की सदस्यता ग्रहण कर तथा धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों में 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' को सहयोग राशि भेजकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सहभागी बनिये।
सम्पर्क–01262-216222, मो० 08901387993

महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भगत, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा को अपने नेतृत्व में शीर्ष पर ले जाने वाले दानवीर, सादगी एवं समर्पण की मिसाल आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान श्री राधाकृष्ण आर्य जी को जन्मदिन के शुभ अवसर की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं। ईश्वर आपको हमेशा स्वस्थ एवं खुशहाल रखे। ऐसी मैं परमपिता परमात्मा से कामना करता हूं, ताकि आपके नेतृत्व में महर्षि दयानंद सरस्वती की शिक्षाएं एवं कार्य जन-जन तक पहुंचे और बेहतर समाज का निर्माण संभव हो सके।

Created by Universal Document Converter

भजन मंडलियों के माध्यम से जन-जन तक पहुंच रही महर्षि दयानंद सरस्वती की शिक्षाओं का प्रचार प्रसार-राधाकृष्ण आर्य

- **आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा द्वारा संचालित प्रचार रथ प्रदेश भर में जगा रही जागरूकता की अलख।**
- **बोले प्राकृतिक कृषि और नशामुक्ति अभियान हैं मुख्य उद्देश्य।**

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान श्री राधाकृष्ण आर्य के नेतृत्व में वेदप्रचार करने वाली भजन मंडलियों के माध्यम से हर गांव, नुक्कड़ व गली में महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जन्म जयन्ती के शुभ अवसर पर उनकी शिक्षाओं और विचारों की गूंज भजनों के माध्यम से प्रदेश भर में सुनाई दे रही है। प्रदेश भर में भजन मंडलियाँ प्रचार रथों के माध्यम से जन-जन को जागरूक करने का कार्य कर रही हैं, जिससे प्रदेश का युवा न केवल स्वयं जागरूक हो रहा है, बल्कि अन्य लोगों को भी जागरूक करने का कार्य कर रहा है। इसके साथ-साथ वेदप्रचार के माध्यम से प्राकृतिक खेती, समाज में व्याप्त कुरीतियों के खिलाफ अभियान, महर्षि दयानंद सरस्वती की शिक्षाओं का प्रचार प्रसार, नशामुक्ति अभियान व आज की पीढ़ी में संस्कार और संस्कृति से अवगत करवा कर उन्हें समाज का सबसे नागरिक बनाया जा रहा है ताकि हर युवा देश को मजबूत बनाने के लिए अपना योगदान दे सकें।

आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान राधाकृष्ण आर्य ने बताया कि प्रदेश भर में 12 से अधिक प्रचार रथों के माध्यम से वेदप्रचार का कार्य किया जा रहा है और सभी प्रचार रथों के साथ भजन मंडलियों की ड्यूटी लगाई गई है, जो गांव-गांव जाकर महर्षि दयानंद सरस्वती की शिक्षाओं और नीतियों का प्रचार-प्रसार कर लोगों को जागरूक करने का कार्य कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि प्रचार बेहद हाईटेक हैं और इनमें हर तरह की व्यवस्था जिसमें साउंड व्यवस्था, स्टेज की व्यवस्था व लाइट आदि की सभी व्यवस्थाएं की गई हैं। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती के उपलक्ष्य में प्रदेश भर में अनेक कार्यक्रम हो चुके हैं और आगामी समय में इन कार्यक्रमों को निश्चित रूप से बढ़ाया जाएगा, जिससे अधिक से अधिक लोगों तक आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा संदेश पहुंचा सके। उन्होंने कहा कि अधिक से अधिक लोगों को आर्यसमाज से जुड़कर महर्षि दयानंद सरस्वती की शिक्षाओं और नीतियों को अपने जीवन में आत्मसात् करना चाहिए।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के तत्त्वावधान में आर्यवीर एवं आर्य वीरांगनाओं का प्रांतीय आर्य वीर दल शिविर 1 जून से 5 जून 2023 आर्यवीर लड़कों के लिए एवं 7 जून से 11 जून आर्य वीरांगना लड़कियों के लिए गुरुकुल कुरुक्षेत्र हरियाणा में आयोजित किया जा रहा है, जिसमें महामहिम राज्यपाल गुजरात एवं संरक्षक गुरुकुल कुरुक्षेत्र आचार्य देवव्रत जी का पावन सान्निध्य एवं मार्गदर्शन श्री राधाकृष्ण आर्य, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा शिरकत करेंगे।

गुरुकुल आर्यकुलम् नीलोखेड़ी जिला करनाल में आयोजित आर्यवीर दल शिविर में शारीरिक व्यायाम करते गुरुकुल के ब्रह्मचारी।

Created by Universal Document Converter

वे प्यारे नेता कहाँ गए?

देवभूमि यह देश है, आर्यावर्त महान्।
गौतम, बुद्ध, कपिल कणादि से, हुए यहाँ विद्वान्॥
हुए यहाँ विद्वान्, अगस्त्य जैसे ऋषि नामी।
विश्वामित्र, वशिष्ठ, वेदविद्या के स्वामी॥
श्रीराम, श्रीकृष्ण, वीर विक्रम न्यायकारी।
चाणक्य मुनि नीतिज्ञ, दयानन्द-वेदाचारी॥

देश भक्त बलवान थे, स्वामी श्रद्धानन्द।
अंग्रेजों की बोलती, की थी उसने बन्द॥
स्वामी ने की बन्द, कांगड़ी गुरुकुल खोला।
कांप गए अंग्रेज, देख वीरों का टोला॥
वीर लाजपतराय, बहादुर सच्चा नेता।
अंग्रेजों से लड़ा, स्वतन्त्रता का प्रचेता॥

जगदेवसिंह सिद्धान्ती, अरु रामेश्वरानन्द।
पंडित श्री नरेन्द्र जी, नायक दानिश नन्द॥
नेता दानिश नन्द, गजब के थे रणबंका।
पृथ्वीसिंह ने बजा दिया था वैदिक डंका॥
श्री कुंवर सुखलाल, वीर वैदिक प्रचारक।
नेता था प्रकाशवीर, भारत उद्धारक॥

शिवकुमार जी शास्त्री, शीलवन्त गुणवान।
देश धर्म का हर समय, वे रखते थे ध्यान॥
वे रखते थे ध्यान, सौम्य स्वभाव निराला।
श्री रामगोपाल, बहादुर था मतवाला॥
ठाकुर था यशपाल, साहसी था बंका नर।
भारत माँ के तपःपूत, थे ये सब प्रवर॥

देश धर्म के रात-दिन, सब करते थे काम।
वेदमार्ग के थे पथिक, किया जगत में नाम॥
किया विश्व में नाम, देश से प्यार उन्हें था।
पुण्य धर्म का अच्छी तरह, विचार उन्हें था॥
देते थे व्याख्यान, पहनकर कुर्ता, धोती।
उनको करके याद, देश की जनता रोती॥

अब नेता हैं स्वार्थी, दलगत सब शैतान।
स्वाध्याय करते नहीं, कुर्सी पर है ध्यान॥
कुर्सी पर है ध्यान, नहीं है ईश्वर का डर।
विद्वानों का मूढ़, नहीं करते हैं आदर॥
दयानन्द के स्वप्न, कौन साकार करेगा?
'नन्दलाल' अब कौन, विश्व उद्धार करेगा?

—पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार, भजनोपदेशक,
आर्यसदन बहीन, जनपद पलवल, मो० 9813845774

ARYA SEN. SEC. SCHOOL, BEGU ROAD, SIRSA

CLASS 10th MERIT LIST

SIMARJEET KAUR
CLASS 10th
89.60%

MANISH
CLASS 10th
89.60%

SONAM RANI
CLASS 10th
87.60%

JASPREET KAUR
CLASS 10th
85.40%

PARTEEK
CLASS 10th
84.20%

JATIN RATHOR
CLASS 10th
83%

KANCHAN
CLASS 10th
82.60%

आर्य सीनियर सेकेंडरी स्कूल, बेगू रोड सिरसा के छात्र एवं छात्राओं द्वारा दसवीं कक्षा के परीक्षा परिणामों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर उन्हें हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं। मैं सभी बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं और स्कूल प्रबंधन व पूरे स्कूल स्टाफ को शुभकामनाएं देता हूं।

—राधाकृष्ण आर्य, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा

आवश्यक सूचना

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक के सभी ग्राहकों को सूचित किया जाता है कि जिन ग्राहकों का जो भी बकाया शुल्क बनता है, वह बकाया शुल्क सभा कार्यालय में जमा करें या मनीऑर्डर द्वारा भेजने का कष्ट करें ताकि हम आपकी पत्रिका समय पर भेजते रहें। शुल्क भेजते समय आप ग्राहक संख्या व मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।

—रघुवरदत्त, पत्रिका लिपिक, मो० 7206865945

Created by Universal Document Converter

प्रकृति को आंख दिखाने.... पृष्ठ 8 का शेष....

कर दिया है। जहरीला कर दिया है। आप जैविक खाद खरीदो। वो प्राकृतिक खाद जो पहले सिर्फ किसान के पास थी। उधर विदेशी एजेंट के घर में भी केंसर होने लगा। शुगर पर तो उनका आनुवांशिक अधिकार था ही, औरतें बाँझ होने लगी और मर्द नपुंसक।

अब बाजार को हर चीज ऑर्गेनिक चाहिये। बिना रासायनिक खाद और पेस्टीसाइड का गेहूँ। बिना इंजेक्शन की सब्जी। देशी गाय का दूध। दूध ना मिले तो देशी गाय का मूत्र ही ला दो। सेठ/सेठाणी को दिल का दौरा पड़ा है। बाजार के 15-16 साल के बच्चे एक एक क्विंटल के हो रहे हैं। मात्र अपना शरीर ढो सकें वह भी एक अचीवमेंट है।

अब सरकार/एग्री साइंटिस्ट कह रहे हैं। पारम्परिक खेती मत करो, बागवानी करो/ हर्बल खेती करो/औषधीय पौधे ऊगाओ/कमर्शियल खेती करो। ऊगा तो लेगा किसान पर यहाँ भी वही विदेशी एजेंट का रोल। किसान को मार्केटिंग नहीं आती। अपना प्रोडक्ट सीधे इंडस्ट्री को बेचना नहीं आता। मतलब मुनाफा वसूली कोई और करेगा। कटना हर हाल में खरबूजे को ही है।

ऐसे में फिर से अपनी जड़ों की ओर लौटने की जरूरत है पूर्ण जड़ों की जानकारी हमारे पूर्वजों और हमारे बड़े बुजुर्गों से अधिक कोई नहीं जानता। यह है प्राकृतिक खेती, इसके माध्यम से फिर से प्रकृति के सान्निध्य में बिना जहर की खेती कर अस्पतालों में लगने वाले लंबी लाइनों से बचा जा सकता है और आने वाली पीढ़ियों को बंजर भूमि, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण समेत जहरीले खाद्य पदार्थों से बचाया जा सकता है। आओ जीवनदायिनी प्रकृति से प्राकृतिक खेती रूपी अमृत प्राप्त करें और जहर उगाना और जहर खाना बिल्कुल बंद करें, क्योंकि प्रकृति को चुनौती देकर हम सर्वशक्तिमान ईश्वर को चुनौती दे रहे हैं, अपनी सुख-सुविधाओं के लिए और अपने बढ़ते लालच के लिए हमने उस प्रकृति को ही चुनौती दे दी, जिसने हमें सब कुछ दिया। प्रकृति को चुनौती देने के परिणाम हम कई महामारियों के रूप में देख चुके हैं और अगर अब भी नहीं समझे तो भविष्य में निश्चित रूप से हमें सोचने का मौका भी नहीं मिलने वाला। **—प्रदीप दलाल की कलम से**

चक्रव्यूह में आज का.... पृष्ठ 5 का शेष....

वह बात नहीं बनती। युवक प्रारम्भ में जोश के कारण उस परम्परा को सर्वस्व मानकर उसी में अपनी सारी शक्ति लगा देते हैं। अपनेपन के नाम पर युवक का उससे ऐसा लगाव हो जाता है कि वह उससे भिन्न कुछ नहीं सोचता और न ही उसके विविध पहलुओं पर विचार के लिए तैयार ही होता। ऐसी ही एक स्थिति का श्री प्रेमचन्द जी ने सेवासदन के विवाह पर तात्कालिक रिवाज के अनुसार नाचने वाली को बारात में ले जाना चाहिए या नहीं पर विचार होता है। वैसे इस प्रसंग में जहाँ यह सोचना चाहिए कि परम्परा कितनी सत्य, हितकारी, उचित है तथा उसका जीवन के विकास में क्या योगदान है। अत: हमारे जीवन में जिस बात से प्रगति और सम्मान की भावना उभरे। वही हमारे लिए सत्य, हितकारी और उपयोगी और उचित है।

आइए! अब इसी कसौटी को सामने रखकर धर्म, शास्त्र आदि पर क्रमशः कुछ विचार करते हैं।

धर्म—धर्म शब्द धृ धातु से बनता है, जिसका अर्थ है-धारण, पालन, अपनाना। (अत: ध्रियते, धार्यते, सेव्यते, सुखप्राप्तये य: स धर्म तथा यो धारयति सधर्म:)।

प्रेरक वचन

- **आत्मीयता के बिना अगाध प्रियता की उपलब्धि नहीं होती।**
- **उपासना-प्रभु से सम्बन्ध स्वीकार करो, उपासना हो गई।**
- **सेवा-प्रभु के नाते सभी से सद्भाव व सहयोग रखो-सेवा हो गई।**
- **बल का सदुपयोग की कर्त्तव्य निष्ठा का जीवन है।**
- **निश्चितत-जो हो रहा है मंगलमय विधान से हो रहा है।**
- **प्रार्थना-प्रभु से प्रेम की आवश्यकता अनुभव करो-प्रार्थना हो गई।**
- **प्रियता-जो है (प्रभु) वही मेरा अपना है, इसमें आस्था स्वीकार कर ली।**

संकलन—भलेराम आर्य, गांव सांघी, जिला रोहतक, मो० 9416972879

Created by Universal Document Converter

आज आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान श्री राधाकृष्ण आर्य जी ने महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के कुलपति प्रोफेसर राजवीर सिंह जी से मुलाकात की तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित हो रहे कार्यक्रमों और गतिविधियों को लेकर विस्तृत चर्चा की। साथ में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालयाधीक्षक श्री सत्यवान आर्य बैठे हैं।

आज आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा प्रधान श्री राधाकृष्ण आर्य ने राजौंद स्थित आर्य पब्लिक स्कूल का दौरा किया और इस दौरान स्कूल प्रबंधन ने उन्हें स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर अंतरंग सदस्य राममेहर आर्य, कॉलेजियम सदस्य सुनील आर्य, सुरेंद्र आर्य, वेद प्रचारक मनीराम आर्य एवं अन्य उपस्थित रहे।

Created by Universal Document Converter

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान श्री राधाकृष्ण आर्य ने कहा कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र के छात्रों को शिक्षा के साथ-साथ खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं। गुरुकुल कुरुक्षेत्र ने न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में अपने उत्कृष्ट शिक्षा प्रदर्शन के साथ-साथ खेलों के क्षेत्र में अग्रणी प्रदर्शन कर पूरे विश्व में ख्याति प्राप्त की है, जिसका पूरा श्रेय पूर्व में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के आचार्य रहे और वर्तमान में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के संरक्षक महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी को जाता है। उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए पूरे पर बंधन और पूरे स्टाफ समेत सभी बच्चों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

श्री ....

पता ....

....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा

Created by Universal Document Converter